समाज विकासमाला

तुलसी-मानस-मोती

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

1547

समाज-विकास-माला : २६

तुलसी-मानस-मोती

रामायण की चुनी हुई सूक्तियों का संग्रह

GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

●

संग्राहक

अशोक

●

संपादक

यशपाल जैन

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧಿ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9623
ಗಾಂಧಿ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

●

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

तीसरी बार : १९५८

मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
सुरेंद्र प्रिंटर्स प्राईवेट लि०
दिल्ली

(1547)
GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों। यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान रखी गई है और जहांतक हो सका है, मिले-जुले कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं होने दिया है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। विषय ऐसे लिये गए हैं, जिनमें पाठकों की खास रुचि हो। छपाई-सफाई के बारे में विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

हम चाहते हैं कि इन किताबों को पढ़कर इनके बारे में पाठक हमें अपनी राय लिखें। यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम होती हो तो उसकी भी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें। हम उनपर विचार करेंगे और उन सुझावों की बुनियाद पर किताबों को और ज्यादा अच्छी और उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे।

तीसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का तीसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायेंगे।

—मंत्री

पाठकों से

आपने तुलसीदासजी का नाम तो सुना होगा। उनकी रामायण की बहुत-सी चौपाइयां और दोहे भी पढ़े या सुने होंगे। इस किताब में तुलसीदासजी का परिचय और उनकी रामायण में से कुछ चुनी हुई सूक्तियां दी गई हैं। ये बहुत ही मूल्यवान हैं। इन्हें याद कर लीजिये और सबेरे उठकर रोज इनका पाठ कीजिये, मनन कीजिये। उससे आपको बड़ा लाभ होगा। विचार शुद्ध होंगे, दिल ऊंचा होगा और आप समझेंगे कि जीने का असली आनंद क्या है।

'कबीर के बोल', 'गिरिधर की कुण्डलियां' और 'रहीम के दोहे' आप पढ़ चुके हैं। अब 'तुलसी-मानस-मोती' पढ़ लीजिये। आगे आपको 'दादू की वाणी' जल्दी ही मिलेगी।

इस माला की सब किताबों को आप अपने पास रखिये और अपने साथियों से कहिये कि वे भी इन्हें पढ़ें और अपने पास रखें।

—संपादक

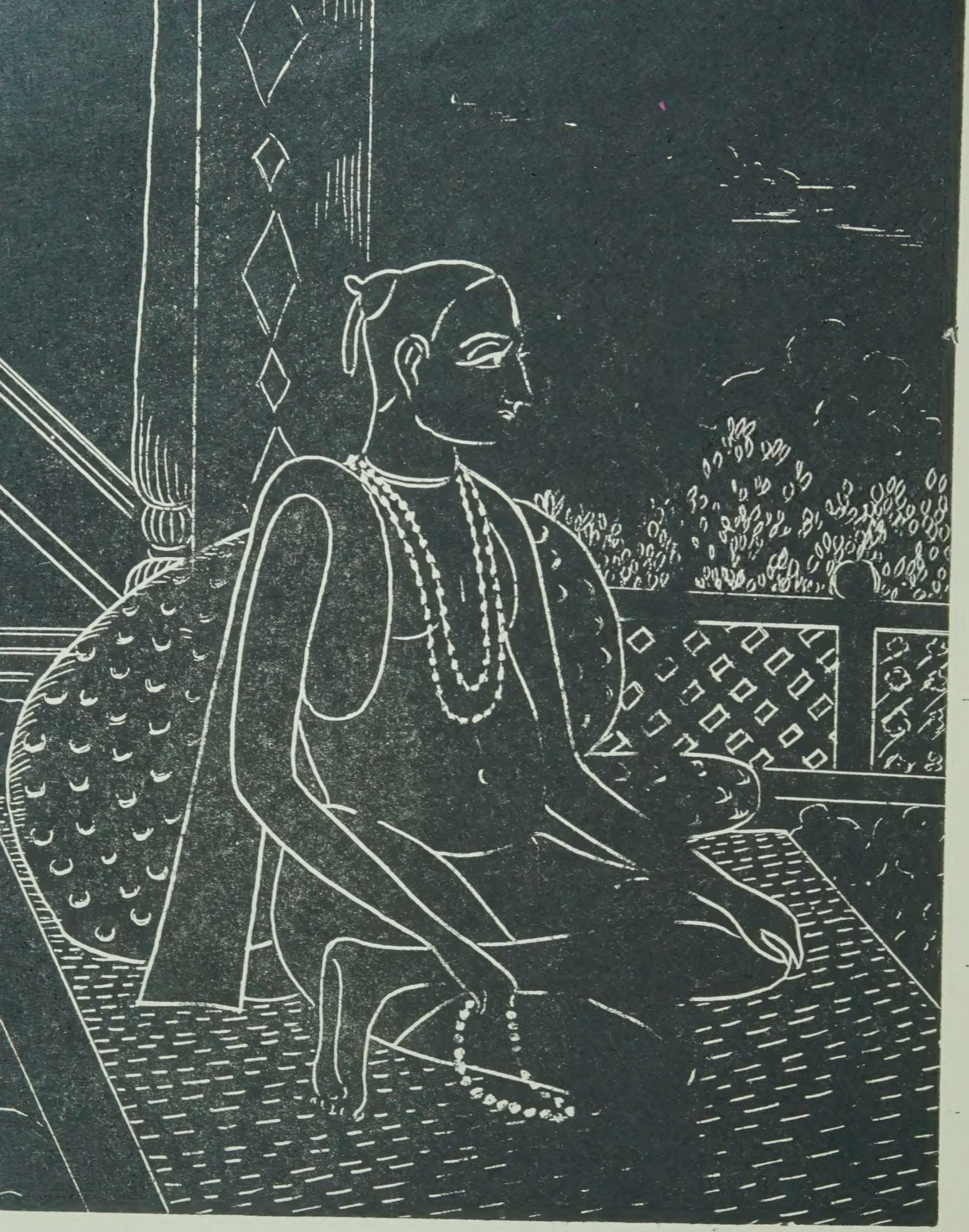

गोस्वामी तुलसीदास

तुलसी-मानस-मोती

: १ :

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास को कौन भारतवासी नहीं जानता होगा ? कौन ऐसा भक्तजन होगा, जिसने रामायण न पढ़ी हो ? सारे उत्तर भारत में रामनाम का प्रचार जितना तुलसीदासजी के 'रामचरित-मानस' के कारण है, उतना और किसी कारण नहीं। कवि बेनी ने ठीक ही कहा है :

वेद मत सोधि-सोधि सोधि कै पुरान सबै
संत औ असंतन को भेद को बतावतो ।।
कपटी कुराही कूर कलि के कुचाली जीव
कौन राम नामहू की चरचा चलावतो ।।
बेनी कवि कहै मानो मानो हो प्रतीति यह
पाहन-हिये में कौन प्रेम उपजावतो ।।
भारी भवसागर उतारतो कौन पार
जो पै यह रामायन तुलसी न गावतो ।।

भारत में एक समय ऐसा आगया था, जबकि लोग भक्तिभाव भूल गये थे, बुरे रास्ते चलते थे, अनीति-अनाचार बढ़ गया था। ऐसे समय में तुलसीदासजी ने 'रामचरित-मानस' की रचना करके मानव-जाति का जो उपकार किया उसे कौन भूल सकता है ?

तुलसीदासजी थे कौन ? उनको हुए ३-३॥ सौ बरस होगये, पर उनकी जीवन-कथा का ठीक-ठीक पता नहीं चलता। उनकी लिखी पुस्तकों के आधार पर लेखकों ने अटकलें लगाकर उनकी जीवनी रच डाली है। पर इतना जरूर तय होगया है कि संवत् सोलह सौ और सत्रह सौ के बीच के समय में तुलसीदासजी हुए थे। अभी तक उनके जन्म-स्थान का भी ठीक पता नहीं लगा है। कोई राजापुर कहते हैं, तो कोई सोरों। माना यह जाता है कि राजापुर के एक ब्राह्मण-कुल में तुलसीदासजी का जन्म हुआ। जन्म के बाद ही इनके माता-पिता का देहांत होगया। ये अनाथ होगये और दर-दर भीख मांगते और भटकते रहे। सोरों में इनको स्वामी नरहरिदास ने अपनाया, पढ़ाया-लिखाया और पाल-पोसकर बड़ा किया। वे इनको राम-कथा सुनाया करते। उस समय के अच्छे संस्कार तुलसीदासजी पर जम गये। बड़े होने पर इनका

विवाह हुआ। ये अपनी पत्नी को बहुत चाहते थे। अपने से अलग नहीं होने देते थे। एक बार मां का जोरदार बुलावा आने पर इनकी पत्नी अपने भाई के साथ नैहर चली गई। तुलसीदास को घर आने पर मालूम हुआ तो बड़े दुखी हुए और तुरंत अपनी ससुराल को रवाना होगये। बारिश के दिन थे। गंगा में बाढ़ आ रही थी, पर उसकी परवा न करके वह अपनी जान को जोखिम में डालकर नदी में कूद पड़े और तैरकर रातोरात ससुराल पहुंचे। जब इनकी पत्नी को यह मालूम हुआ तो उसे बहुत बुरा लगा। उसने इनकी आवभगत तो नहीं की, उलटे उलाहना दिया कि तुम मेरे बिना जरा देर भी घर नहीं टिक सके ! जितना प्रेम इस हाड़-मांस के पुतले को करते हो उतना भगवान राम से करते तो जन्म सुधर जाता।

इस खीजभरे उलाहने का तुलसीदास पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। ये वहां नहीं रुके और न घर ही वापस गये। वहीं से भगवान का नाम लेकर तीर्थ-यात्रा को निकल पड़े। इनकी पत्नी को जब खयाल हुआ कि अब अपने पति से मिलना नहीं हो सकेगा तो उसने पछता-पछताकर अपने प्राण दे दिये।

यात्रा में तुलसीदासजी भगवान राम का स्मरण

करते, साधु-संतों का समागम करते और कथा-वार्ता कहते-सुनते । इनकी राम-कथा और रामभक्ति की चारों ओर बड़ी चर्चा होने लगी । कहते हैं कि हनुमान की कृपा से इनको चित्रकूट में रामचंद्रजी के दर्शन हुए । इस संबंध में यह दोहा बड़ा प्रसिद्ध है :

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर ।
तुलसीदास चंदन घिसें, तिलक करें रघुबीर ।।

उन्हीं दिनों मीराबाई राजस्थान में कृष्ण-भक्ति की गंगा बहा रही थीं । उसके कारण उनके देवर चित्तौड़ के राणा उनको बहुत सताते थे । मीराबाई ने दुखी होकर तुलसीदास से पूछा कि वह क्या करें ? तुलसीदासजी ने नीचे लिखा पद लिख भेजा :

जाके प्रिय न राम वैदेही ।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जदपि परम सनेही ।
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी,
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज बनितनि भये मुद मंगलकारी ।

यह संदेश पाने के बाद ही मीराबाई चित्तौड़ छोड़कर वृंदाबन चली गईं ।

एक बार तुलसीदासजी वृंदाबन गये। वहां तो सब जगह श्रीकृष्ण भगवान को मूर्तियां थीं। तुलसीदासजी राधागोविंदजी के मंदिर में गये, मूर्त्ति को हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और बोले :

मोर मुकुट कटि काछिनी, भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक जब नवै, धनुष-बाण लो हाथ ॥

कहते हैं कि तुलसीदासजी को वहां धनुषधारी रामचंद्र-जी के दर्शन हुए।

कहा जाता है कि इस प्रकार जब तुलसीदासजी राम-भक्ति में बहुत लीन होगये तो शिवजी ने इनको रामचंद्रजी की कथा लिखने को प्रेरणा की और इन्होंने २-२॥ वर्ष की कड़ी मेहनत से 'रामचरित-मानस' को अवधी भाषा में लिखा। उस समय का पंडित-समुदाय तुलसीदासजी से बड़ा जलता था, क्योंकि तुलसीदासजी की रामायण-कथा से साधारण जनता में इनकी बड़ी तेजी से जगह बनने लगी थी और पंडितों के प्रति अश्रद्धा-सी होने लगी थी। पंडितों ने तुलसीदासजी को नुकसान पहुंचाने के बहुत प्रयत्न किये, लेकिन उनकी एक न चली। हर बार राम ने उनको बचाया।

तुलसीदासजी ने रामायण के अलावा और भी छोटे-छोटे २५-२६ ग्रंथ लिखे हैं, जिनमें रामायण के समान ही 'विनय-पत्रिका' बहुत प्रचलित है। इसमें तुलसीदासजी ने रामचंद्रजी की स्तुति और भक्ति के अनेक पद लिखे हैं।

संवत् १६८० में तुलसीदासजी का काशी में देहांत होगया।

तुलसीदासजी की पूरी जीवन-कथा नहीं मिलती; पर उन्होंने जो राम-कथा लिखी है वह ऐसी अनुपम, मधुर और लोक-कल्याणकारी है कि जबतक इस धरती पर 'रामचरित-मानस' रहेगी, तुलसीदासजी का नाम भी रहेगा।

तुलसीदासजी ने राम-कथा लिखते हुए बीच-बीच में ऐसे मोती पिरो दिये हैं कि उनमें से कुछ मोती चुनकर हमने अपने रोज के पाठ और मनन के लिए उतार लिये थे। सबके लाभ के लिए उन्हें आगे दिया जाता है।

: २ :

वंदना

सो०-जो सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिबर बदन[1] ।
करउ अनुग्रह सोई, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ।।
मूक होइ बाचाल, पंगु[2] चढ़इ गिरबर गहन ।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवउ सकल कलि मल दहन ।।
नील सरोरुह[3] स्याम, तरुन अरुन बारिज नयन ।
करउ सो मम उर धाम, सदा छीर-सागर सयन ।।
कुन्द इन्दु[4] सम देह, उमा रमन करुना अयन ।
जाहि दीन पर नेह, करउ कृपा मर्दन नयन ।।
वन्दउं गुरु पद कंज, कृपा सिन्धु नर रूप हरि ।
महामोह तम पुंज, जासु बचन रवि कर निकर ।।
वन्दउं मुनि पद कंज, रामायन जेहिं निरमयउ ।
सखर सुकोमल मंज, दोष रहित दूषन सहित ।।
वन्दउं अवध भुआल[5], सत्य प्रेम जेहि राम पद ।
बिछुरत दीन दयाल, प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ ।।
वन्दउं पवन-कुमार, खल बन पावक ग्यान धन ।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम सर-चाप[6] धर ।।
दो०-गिरा अरथ जल बीचि सम, कहिअत भिन्न न भिन्न
बन्दउं सीता रामपद, जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ।

---

१. गणपति २. लूला ३. कमल ४. सफेद कमल ५. राजा
६. धनुष-बाण

: ३ :

मानस-मोती

परहित सरिस धरम नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई[1] ।।
परहित लागि तजइ जो देही ।
संतत संत प्रसंसहिं तेही ।।
परहित बस जिनके मन मांहीं ।
तिन्ह कहं जग दुरलभ कछु नाहीं ।।
बिनु सतसंग बिबेक न होई ।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ।।
सत संगति मुद मंगल मूला ।
सोइ फल सिधि सब साधन फूला ।।
सठ[2] सुधरहिं सत संगति पाई ।
पारस परस कुधात सुहाई ।।

दो०—बंदउ संत समान चित, हित अनहित नहिं कोइ ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि, सम सुगंध कर दोइ ।।

बन्दौं सन्त असज्जन चरना ।
दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ।।
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं ।
मिलन एक दारुन दुख देहीं ।।

---
१ नीचता. २ धूर्त्त, दुष्ट

उपजहिं एक संग जग मांहीं ।
जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ।
सुधा सुरा सम साधु असाधू ।
जनक एक जग जलधि अगाधू ।।
भल अनभल निज निज करतूती ।
लहत[1] सुजस अपलोक बिभूति ।।
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू ।
गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू ।।
गुन अवगुन जानत सब कोई ।
जो जेहि भाव नीक[2] तेहि सोई ।।
खल अघ अगुन साधु गुनगाहा ।।
उभय अपार उदधि अवगाहा ।।
तेहि ते कछु गुन दोष बखाने ।
संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने ।।
दो०—भलो भलाइहि पै लहइ, लहइ निचाई नीचु ।
सुधा सराहिअ अमरता, गरल सराहिअ मीचु[3] ।।
दो०—जड़ चेतन गुन दोषमय, बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि विकार ।।
अस विवेक जब देहिं विधाता ।
तब तजि दोष गुनहिं मनु राता[4] ।।

१. प्राप्त करते हैं २. अच्छा ३. मृत्यु ४. रमता है

काल सुभाउ करम बरि आई।
भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई॥

धूम कुसंगति कालिख होई।
लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई॥

सोइ जल अनल अनिल संघाता।
होइ जलद जग जीवन दाता॥

सुमति कुमति सबके उर रहहीं।
नाथ पुरान निगम[1] अस कहहीं॥

जहां सुमति तहं संपति नाना।
जहां कुमति तहं विपति निदाना॥

धन्य सो भूप नीति जो करई।
धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई॥

धन्य घरी सोई जब सतसंगा।
धन्य जन्म हरि-भक्त अभंगा[2]॥

गुरु पितु मातु स्वामि हित बानी।
सुनि मन मुदित करिय भल जानी॥

उचित कि अनुचित किये बिचारू।
धर्म जाइ सिर पातक भारू॥

---

१. वेदशास्त्र २. लगातार

दो०-अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितु बैन[1] ।
ते भाजन सुख सुजस के, बसहिं अमरपति-ऐन[2] ।।

बिनु संतोष न काम नसाहीं ।
काम अछत[3] सुख सपनेहुं नाहीं ।।
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा ।
थल बिहीन तरु कबहुं कि जामा ।।
बिन बिग्यान कि समता आवइ ।
कोउ अवकास कि नभ बिनु पावइ ।।
श्रद्धा बिना धरमु नहिं होई ।
बिनु महि गंध कि पावइ कोई ।।
बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा ।
जलु बिनु रस कि होइ संसारा ।।
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई ।
जिमि बिनु तेज न रूप गुसाईं ।।
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा[4] ।
परस कि होइ बिहीन समीरा ।।
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा ।
बिनु हरिभजन न भव भय नासा ।।

दो०-बिनु गुरु होइ कि ग्यान, ग्यान कि होइ बिरागबिनु ।
गावहिं वेद पुरान, सुख कि लहहिं हरि-भक्त बिनु ।।

---

१. वचन २. स्वर्ग ३. होते हुए ४. शांत

सो०—कोउ बिस्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष बिनु ।
चलइ कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि पचि मरिय ।।

परद्रोही कि होई निहसंका ।
कामी पुनि रहहि अकलंका ।।
भव कि परहिं परमातम बिंदक ।
सुखी कि होहिं कबहुं परनिंदक ।।
राज कि रहहिं नीति बिनु जाने ।
अघ[1] कि रहइ हरिचरित बचाने ।।
पावन जस कि पुन्य बिनु होई ।
बिनु अघ अजस कि पावइ कोई ।।

दो०-बिनु बिस्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं[2] न राम ।
राम कृपा बिनु सपनेहुं, जीव न लह बिस्राम ।।

कवि कोबिद[3] गावहिं अस नीती ।
खल सन कलह न भल नहिं प्रीति ।।
उदासीन नित रहिय गुसाईं ।
खल परिहरिय स्वान[4] की नाईं ।।
बायस[5] पालिय अति अनुरागा ।
होइ निरामिष कबहुं कि कागा ।।
संत सहहिं दुख परहित लागी ।
पर दुख हेत असंत अभागी ।।

१. पाप २. दया करते ३. ज्ञानी ४. कुत्ते ५. कौआ

साधु चरित सुभ सरिस कपासू।
निरस बिसद गुनमय फल जासू॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा[1]।
बन्दनीय जेहि जग जस पावा॥
को न कुसंगति पाइ नसाई।
रहइ न नीच मते चतुराई॥

सो०-फूलई फरइ न बेत, जदपि सुधा बरसहिं जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं बिरंचि[2] सम॥

नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं।
प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं॥
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू॥
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा।
मुये[3] करै का सुधा तड़ागा॥
का वर्षा जब कृषी सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछिताने॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी॥
कर्म प्रधान बिस्व करि राखा।
जो जस करइ सो तस फल चाखा॥

१. छिपाना २. ब्रह्म ३. मर जाने पर

काहु न कोउ दुख सुख कर दाता ।
निज कृत कर्म भोग सब भ्राता ।।

सो०-जल पय सरिस बिकाइ, देखहु प्रीति की रीति भल ।
बिलग होइ रस जाइ, कपट खटाई परत ही ।।

कसे कनक मनि पारखि पाये ।
पुरुष परखिये समय सुभाये ।।
सुन जननी सोइ सुत बड़भागी ।
जे पितु मातु बचन अनुरागी ।।
तनय[1] मातु पितु पोषनिहारा ।
दुर्लभ जननि सकल संसारा ।।
धन्य जनम जगतीतल तासू ।
पितहिं प्रमोद चरित सुनि जासू ।।
चारि पदारथ करतल[2] ताके ।
प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके ।।

दो०-गुरु श्रुति सम्मत धर्म फल, पाइय बिनहिं कलेस ।
हठ बस सब संकट सहे, गालव नहुष नरेस ।।
सहज सुहृद गुरु स्वामि सिख, जो न करइ सिर मानि ।
सो पछताइ अघाइ उर, अवसि होय हित हानि ।।

१. पुत्र २. सुलभ

सेवक सुख चह मान भिखारी।
व्यसनी धन सुभ गति बिभिचारी॥

लोभी जस चह चारु गुमानी।
नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी॥

राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा।
हरिहिं समर्पे बिनु सत्कर्मा॥

विद्या बिनु विवेक उपजाये।
श्रम फल पढ़े किये अरु पाये॥

प्रीति प्रनय बिनु मद तें गुनी।
नासहिं बेगि नीति अस सुनी॥

नवनि नीच कै अति दुखदाई।
जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई॥

दो०-सचिव बैद गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीन कर, होइ बेग ही नास॥

बरु भल बास नरक कर ताता।
दुष्ट संग जनि देहिं बिधाता॥

कादर मन कर एक अधारा।
दैव दैव आलसी पुकारा॥

सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती ।
सहज कृपिन सन सुन्दर नीती ।।
ममता रत सन ग्यान कहानी ।
अति लोभी सन विरति[१] बखानी ।।
क्रोधिहिं सम कामिहिं हरि कथा ।
ऊसर बीज बये फल जथा ।।
कौल काम बस कृपिन बिमूढ़ा ।
अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ।।
सदा रोग बस संतत क्रोधी ।
विष्णु बिमुख श्रुति सन्त बिरोधी ।।
तन पोषक निंदक अघ खानी ।
जीवत शव सम चौदह प्रानी ।।

दो०—राकापति[२] षोड़श उअहिं, तारागन समुदाय ।
सकल गिरिन्ह दव[३] लाइये, रवि बिन राति न जाय ।।

पर उपदेस कुसल बहुतेरे ।
जे आचरहिं ते नर न घनेरे[४] ।।
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं ।
ऐसे नर निकाय[५] जग अहहीं ।।

---

१. वैराग्य, २. चंद्रमा, ३. आग, ४. अधिक, ५. समुदाय ।

बचन परम हित सुनत कठोरे।
सुनहिं जे कहहिं ते नर जग थोरे॥

अति संघर्षन करै जो कोई।
अनल प्रगट चंदन तें होई॥

सन्त विटप[1] सरिता गिरि धरनी।
पर हित हेतु सबन्हि कै करनी॥

सन्त हृदय नवनीत समाना।
कहा कबिन पै कहइ न जाना॥

निज परिताप द्रवइ नवनीता।
पर दुख द्रवहिं सो सन्त पुनीता॥

नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं।
सन्त मिलन सम सुख कछु नाहीं॥

जे कामी लोलुप जग माहीं।
कुटिल काक इव सबहि हेराहीं[2]॥

सीम कि चांपि सकइ कोउ तासू।
बड़ रखवार रमापति जासू॥

सो०-तुलसी देखि सुवेषु, भूलहिं मूढ़ न चतुर नर।
सुन्दर केकिहि[3] पेखु, बचन सुधा सम असन[4] अहि[5]॥

---

१. वृक्ष, २. देखते हैं, ३. मोर, ४. खाना, ५. सांप।

आदि अन्त कोउ जासु न पावा ।
मति अनुमानि निगम अस गावा ।।
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना ।
कर बिनु करम करइ बिधि नाना ।।
आनन रहित सकल रस भोगी ।
बिनु बानी बकता बड़ जोगी ।।
तन बिनु परस नयन बिनु देखा ।
ग्रहइ घ्रान[1] बिनु बास असेषा ।।
असि सब भांति अलौकिक करनी ।
महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ।।

सो०-सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल ।
अस बिचारि मन मांहि, भजिअ महामाया-पतिहि[2] ।।

दो०—राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरीं द्वार ।
तुलसी भीतर बाहर हुं, जौ चाहसि उजियार ।।

: ४ :

नाम-महिमा

दो०-सकल कामना हीन जे, राम भगति रसलीन ।
नाम सुप्रेम पियूष[3] हृद[4], तिन्हहुं किए मन मीन ।।

१. नाक, २. लक्ष्मीपति, ३. अमृत, ४. तालाब ।

दो०—सबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्ह रघुनाथ ।
नाम उधारे अमित[1] खल, बेद, बिदित गुन गाथ ।।

राम एक तापस-तिय[2] तारी ।
नाम कोटि खल कुमति सुधारी ।।

भंजेउ राम आपु भव चापू ।
भव भय भंजन नाम प्रतापू ।।

निसिचर निकर दले रघुनंदन ।
नामु सबल कलि कलुष निकंदन ।।

राम सुकंठ बिभीषन दोऊ ।
राखे सरन जान सब कोऊ ।।

नाम गरीब अनेक नेवाजे ।
लोक बेद बर बिरद बिराजे ।।

राम भालु कपि कटकु[3] बटोरा ।
सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा ।।

नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं ।
करहु बिचारु सुजन मन माहीं ।।

रामु सकुल रन रावनु मारा ।
सीय सहित निज पुर पगु धारा ।।

---

१. बहुत २. तपस्वी की स्त्री—अहिल्या ३. सेन

राजा राम अवध रजधानी ।
गावत गुन सुर मुनि बरबानी ।।
सेवक सुमिरत नामु सुप्रीती ।
बिनु स्रम प्रबल मोह दलु जीती ।।

दो०-ब्रह्म राम तें नामु बड़, बरदायक बर दानि ।
रामचरित सतकोटि महं, लिय महेस जिय जानि ।।
नामु राम को कलप तरु, कलि कल्यान निवासु ।
जो सुमिरत भयो भाग तें, तुलसी तुलसी दासु ।।
राम नाम नर केसरी, कनक कसिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालहि पलि सुरसाल ।।

: ५ :

राम-सदन

काम कोह मद मान न मोहा ।
लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ।।
जिन्हके कपट दंभ नहिं माया ।
तिन्हके हृदय बसहु रघुराया ।।
सबके प्रिय सबके हितकारी ।
सुख दुख सरिस प्रसंसा गारी ।।

कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी ।
जागत सोवत सरन तुम्हारी ।।

तुमहिं छांड़ि गति दूसरि नाहीं ।
राम बसहु तिनके मन माहीं ।।

जननी सम जानहिं परनारी ।
धन पराय विष तें विष भारी ।।

जे हरषहिं पर संपति देखी ।
दुखित होहिं पर बिपति बिसेखी ।।

जिन्हहिं राम तुम प्रान पियारे ।
तिन्हके मन सुभ सदन तुम्हारे ।।

दो०-स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिन्हके सब तुम तात ।
मन मंदिर तिन्हके बसहु, सीय सहित दोउ भ्रात ।।

अवगुन तजि सबके गुन लहहीं ।
बिप्र धेनु हित संकट सहहीं ।।

नीति निपुन जिन्ह कह जगलीका ।
घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ।।

गुन तुम्हार समुझै निज दोसा ।
जेह सब भांति तुम्हार भरोसा ।।

राम भगत प्रिय लागहिं जेही ।
तेहि उर बसहु सहित बैदेही ।।
जाति पांति धनु धरमु बड़ाई ।
प्रिय परिवार सदन सुखदाई ।।
सब तजि तुम्हहिं रहैं लउ[1] लाई ।
तेहिके हृदय रहहु रघुराई ।।
सरगु नरकु अपबरगु[2] समाना ।
जहं तहं देख धरे धनुबाना ।।
करम बचन मन राउर[3] चेरा ।
राम करहु तेहिके उर डेरा ।।

दो०—जाहि न चाहिऊ कबहुं कछु, तुम्ह सन सहज सनेहु ।
बसहु निरंतर तासु मन, सो राउर निज गेहु ।।

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ।
तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी ।।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना ।
मित्र के दुख रज मेरु समाना ।।
जिनके अस गति सहज न आई ।
ते सठ हठ कर करत मिताई ।।

१. ध्यान २. मोक्ष ३. आपका

कुपथ निवारि सुपंथ चलावा।
गुन प्रगटै अवगुनहिं दुरावा।।
देत लेत मन संक न धरई।
बल अनुमान सदा हित करई।।
बिपति काल कर सत गुन नेहा।
श्रुति कह सत्य मित्र गुन एहा।।
आगे कह मृदु बचन बनाई।
पीछे अनहित मन कुटिलाई।।
जाकर चित अहिगति सम भाई।
अस कुमित्र परिहरहुं भलाई।।
निज कबित्त केहि लाग न नीका।
सरस होउ अथवा अति फीका।।
जे पर भनिति[1] सुनत हरखाहीं।
ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं।।
जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा।
जाइअ बिनु बोलेहुं न संदेहा।।
तदपि बिरोध मान जहं कोई।
तहां गए कल्यानु न होई।।
जद्यपि जग दारुन दुख नाना।
सबतें कठिन जाति अपमाना।।

१. रचना

संत संभु श्रीपति अपबादा।
सुनिअ जहां तहं असि मरजादा।।
काटिअ तासु जीभ जो बसाई।
श्रवन मूदि नत चलिअ पराई।।

: ६ :

प्रार्थना

दो०-मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर।
अस बिचारि रघुवंश मणि, हरहु विषम भव-पीर।।
कामिहि नारि पियार जिमि, लोभी प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर, बसहु सदा मम धाम।।
बार बार वर मांगहुं, हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सत्संग।।

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

आत्मकथा	(गांधीजी)	५·००	भूदान-यज्ञ	(विनोबा)	०·२५
प्रार्थना-प्रवचन २ भाग	,,	५·५०	राजघाट की संनिधि में		०·६२
गीता माता	,,	४·००	विचार-पोथी	,,	१·००
पंद्रह अगस्त के बाद		१·५०, २·००	सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	०·२५
धर्मनीति	,,	१·५०, २·००	जमाने की मांग	,,	०·१२
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३·५०	मेरी कहानी	(नेहरू)	८·००
मेरे समकालीन	,,	५·००	,, संक्षिप्त	,,	२·५०
आत्म-संयम	,,	३·००	हिन्दुस्तान की समस्याएं	,,	२·००
गीता-बोध	,,	०·५०	लड़खड़ाती दुनिया	,,	२·००
अनासक्तियोग	,,	१·५०	राष्ट्रपिता	,,	२·००
ग्रामसेवा	,,	०·३७	राजनीति से दूर	,,	२·००
मंगल-प्रभात	,,	०·३७	हमारी समस्याएं	(१ भाग)	०·७५
सर्वोदय	,,	०·३७	विश्व-इतिहास की झलक		२१·००
नीति-धर्म	,,	०·३७	सं० हिन्दुस्तान की कहानी		५·००
आश्रमवासियों से	,,	०·३७	नया भारत	,,	०·२५
हमारी मांग	,,	१·००	आजादी के आठ साल	,,	०·२५
सत्यवीर की कथा	,,	०·२५	गांधीजी की देन	(रा० से०)	१·५०
संक्षिप्त आत्मकथा	,,	१·००, १·५०	गांधी-मार्ग	,,	०·१२
हिंद-स्वराज्य	,,	०·७५	महाभारत-कथा	(राजाजी)	५·००
अनीति की राह पर	,,	१·००	कुब्जा-सुन्दरी	,,	२·००
बापू की सीख	,,	०·५०	शिशु-पालन	,,	०·५०
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)	,,	१·१२	मैं नहीं भूल सकता	,,	२·५०
आज का विचार (दो भाग)		०·७५	कारावास-कहानी	(सु० नै०)	१०·००
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	,,	१·७५	गांधी की कहानी	(लु० फि०)	४·००
गांधीजी ने कहा था ३ भाग		०·७५	भारत-विभाजन की कहानी		४·००
शान्ति-यात्रा (विनोबा)		१·५०	बापू के चरणों में		२·५०
विनोबा-विचार : २ भाग		३·००	इंग्लैंड में गांधीजी		२·००
गीता-प्रवचन	,,	१·००, १·५०	बा, बापू और भाई		०·५०
जीवन और शिक्षण	,,	२·००	गांधी-विचार-दोहन		१·५०
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	,,	१·००	सर्वोदय-तत्व-दर्शन		७·००
ईशावास्यवृत्त		०·७५	सत्याग्रह-मीमांसा		३·५०
ईशावास्योपनिषद्	,,	०·१२	बुद्ध-वाणी	(वियोगी हरि)	१·५०
सर्वोदय-विचार	,,	१·१२	सन्त सुधासार	,,	११·००
स्वराज्य-शास्त्र	,,	०·५०	श्रद्धाकण	,,	१·००
गांधीजी को श्रद्धांजलि	,,	०·३७	अयोध्याकाण्ड	,,	१·००

भागवत-धर्म (ह० उ०)	६·५०	एक आदर्श महिला	१·००
श्रेयार्थी जमनालालजी ,,	६·५०	राष्ट्रीय-गीत	०·२५
स्वतंत्रता की ओर ,,	४·००	तामिल-वेद (तिरुवल्लुवर)	१·५०
बापू के आश्रम में ,,	१·००	आत्म-रहस्य	३·००
मानवता के झरने (माव०)	१·५०	थेरी-गाथाएं	१·५०
बापू (घ० बिड़ला)	२·००	बुद्ध और बौद्ध साधक	१·५०
रूप और स्वरूप ,,	०·६२	जातक-कथा (आनंद कौ०)	२·५०
डायरी के पन्ने ,,	१·००	हमारे गांव की कहानी	१·५०
ध्रुवोपाख्यान ,,	०·२५	खादी द्वारा ग्राम-विकास	०·७५
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय)	१·००	साग-भाजी की खेती	३·००
मेरी मुक्ति की कहानी ,,	१·५०	ग्राम-सुधार	१·५०
प्रेम में भगवान ,,	२·००	पशुओं का इलाज	०·५०
जीवन-साधना ,,	१·२५	चारादाना	०·२०
कलवार की करतूत ,,	०·२५	रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१·१२
हमारे जमाने की गुलामी ,,	०·७५	रोटी का सवाल (क्रोपा०)	३·००
बुराई कैसे मिटे ? ,,	१·००	नवयुवकों से दो बातें ,,	०·३७
बालकों का विवेक ,,	०·५०	पुरुषार्थ (डा० भगवानदास)	६·००
हम करें क्या ? ,,	३·५०	काश्मीर पर हमला	२·००
धर्म और सदाचार ,,	१·२५	शिष्टाचार	०·५०
अंधेरे में उजाला ,,	१·५०	तट के बंधन	२·००
ईसा की सिखावन ,,	१·००	भारतीय संस्कृति	३·५०
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल)	२·००	आधुनिक भारत	५·००
लोक-जीवन (कालेलकर)	३·५०	फलों की खेती	२·५०
साहित्य और जीवन ,,	२·००	मैं तन्दुरुस्त हूं या बीमार	०·५०
कब्ज (म० प्र० पोद्दार)	१·५०	नवजागरण का इतिहास	३·००
हिमालय की गोद में ,,	२·००	गांधीजी की छत्रछाया में	१·५०, २·५०
कहावतों की कहानियां ,,	२·००	भागवत-कथा	३·५०
राजनीति प्रवेशिका	१·००	जय अमरनाथ	१·५०
जीवन-संदेश (ख० जिब्रान)	३·२५	हमारी लोककथाएं	१·५०
अशोक के फूल	३·००	संस्कृत-साहित्य-सौरभ (२३ पुस्तकें) प्रत्येक	०·३७
जीवन-प्रभात	५·००		
कां० का इतिहास ३ भाग	३०·००	समाज-विकास-माला (४४ पुस्तकें) प्रत्येक	०·३७
पंचदशी	१·००		
सप्तदशी	२·००	कृषि-ज्ञान-कोष	४·००
रीढ़ की हड्डी	१·[illegible]	प्रकाश की बातें	१·५०
अमिट रेखाएं	[illegible]·००	धरती और आकाश	१·५०

ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.:
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.:
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना